धर्म का प्राण यतना है

प्रकाशक
श्री अखिल भारतीय सुधर्म
जैन संस्कृति रक्षक संघ, जोधपुर
शाखा-नेहरू गेट बाहर, ब्यावर (राज.)
☎ (01462) 251216, 257699 फैक्स 250328

सुधर्म जैन संस्कृति रक्षक संघ साहित्य रत्नमाला का ११३ वाँ रत्न

धर्म का प्राण यतना है

संग्राहक
ज्ञानराज मेहता, बैंगलोर

प्रकाशक

श्री अखिल भारतीय सुधर्म
जैन संस्कृति रक्षक संघ, जोधपुर
शाखा-नेहरू गेट बाहर, ब्यावर (राज.)
☎ : (०१४६२) २५१२१६, २५७६९९

द्रव्य सहायक
डोसी परिवार, सांचौर

(स्व. श्रीमान् हरखचन्दजी रुगनाथमलजी डोसी सांचौर की छठी पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में उनके परिवारजन)

प्राप्ति स्थान

१. श्री अ. भा. सुधर्म जैन संस्कृति रक्षक संघ, सिटी पुलिस, **जोधपुर**
२. शाखा-अ. भा. सुधर्म जैन सं. रक्षक संघ, नेहरू गेट बाहर, **ब्यावर**
३. महाराष्ट्र शाखा-माणके कंपाउंड, दूसरी मंजिल आंबेड़कर पुतले के बाजू में, **मनमाड़**
४. कर्नाटक शाखा - श्री सुधर्म जैन पौषध शाला भवन, ३८ अप्पुराव रोड़ छठा मेन रोड़ चामराजपेट, **बैंगलोर-१८** 25928439
५. श्री जशवन्तभाई शाह एदुन बिल्डिंग पहली धोबी तलावलेन पो० बॉ० नं० २२१७, **बम्बई-२**
६. श्रीमान् हस्तीमल जी किशनलालजी जैन प्रीतम हाऊ० कॉ० सोसा० ब्लॉक नं० १० स्टेट बैंक के सामने, **मालेगांव (नासिक)**
७. श्री एच. आर. डोशी जी-३६ बस्ती नारनौल अजमेरी गेट, **दिल्ली-६**
८. श्री अशोकजी एस. छाजेड़, १२१ महावीर क्लॉथ मार्केट, **अहमदाबाद**
९. श्री सुधर्म सेवा समिति भगवान् महावीर मार्ग, **बुलडाणा**
१०. प्रकाश पुस्तक मंदिर, पुरानी धानमंडी, रायजी मोड़ा की गली, **भीलवाड़ा** 327788
११. श्री सुधर्म जैन आराधना भवन २४ ग्रीन पार्क कॉलोनी साउथ तुकोगंज, **इन्दौर**
१२. श्री विद्या प्रकाशन मन्दिर, ट्रांसपोर्ट नगर, **मेरठ** (उ. प्र.)
१३. श्री अमरचन्दजी छाजेड़, १०३ वाल टेक्स रोड़, **चैन्नई** 25357775
१४. श्री संतोषकुमारजी जैन वर्द्धमान स्वर्ण अलंकार ३६४, शापिंग सेन्टर, **कोटा** 2360950

मूल्य : ३-००

१० वीं आवृत्ति
१०,०००

वीर संवत् २५३५
विक्रम संवत् २०६६
सितम्बर २००९

मुद्रक - स्वस्तिक ऑफसेट 'कृष्ण कुंज' ब्रह्मपुरी, अजमेर

धर्म का प्राण यतना

यतना अर्थात् कर्म बन्धन से बचने के लिए सजग बने रहना। प्रतिमा शतक में कहा है कि - यतना का मूल आधार हमारी विवेक वृत्ति है। हमारे चारों तरफ विशाल जीव सृष्टि बिखरी हुई है। आंगन में बिल्लियाँ भाग रही हैं तो गलियों में कुत्तों का साम्राज्य है। रसोई घर में जिंगुर है तो शयनकक्ष में खटमल। चूहों की भागदौड़ तो कहीं चींटियों के घर बने हैं। सिर में जूं, लीक, पेट में लम्बे कीड़े, नारु आदि का उत्पाद प्रत्यक्ष है। दिवारों और आलों में पक्षियों के घोंसले के कारण चीड़ी-कबूतरों के अण्डे भी घरों में कई स्थलों पर मिल जाते हैं। छिपकली, कंसारी, मक्खी, मच्छर, चींटी सभी घरों में परिवार के सदस्यों की तरह डेरा जमाए हुए हैं। नल से आ रहे कच्चे पानी में अगणित त्रस जीवों की घात प्रतिदिन होती है। अनाज में ईली, सागसब्जी में लटें, खुले तेलीय पदार्थों में फूलन आदि जीवों की उत्पत्ति सभी ओर दृष्टिगोचर हो रही है। मल-मूत्र के अविवेक से सम्मूर्च्छिम जीवोत्पत्ति हो रही है। सफाई के अभाव में मकड़ी के जाले दिवारों के कोनों में झूल रहे हैं।

सचित्त मिट्टी पृथ्वीकाय है, कच्चे पानी में अप्काय के जीव हैं। अग्नि, वायु, वनस्पति में भी जीव हैं। खाद्य पदार्थों के ऊपर व फर्नीचर वगैरह में उत्पन्न फूलन, मकान की छत व कम्पाऊन्ड में फैली लीलन-फूलन सर्वत्र अनंतकाय जीव राशि हैं। आलू, प्याज, रतालू, मूली, गाजर सभी अनंतकाय के पिण्ड हैं। जैन समाज में व्यापक रूप से जमीकंद का प्रयोग-हमारे जैनत्व पर प्रश्न चिह्न है।

उठते-बैठते, चलते-फिरते, खाते-पीते, सोते-जागते, पदार्थों को उठाते रखते, दरवाजे खोलते बंद करते, साफ-सफाई करते यदि विवेक लुप्त है, लापरवाही बरती जा रही है तो निश्चित समझिये एक दो

से लगा कर अनंत जीवों की हिंसा होने की संभावना रहती है। हमारी सावधानी, विवेक वृत्ति, यतना अनेक जीवों के प्राणों की रक्षा कर सकती है और हम हिंसा के पाप से सहज में बच सकते हैं। पापों से बचना अर्थात् भविष्य के दुःखों से छुटकारा तथा अनंत निर्जरा एवं पुण्यवानी का अखूट खजाना प्राप्त किया जा सकता है। यतना पूर्वक प्रवृत्ति करने से नवीन पाप कर्म का बंध नहीं होता और पहले बंधे हुए कर्मों का क्षय होता है।

प्रमाद, आलस्य, जल्दबाजी, लापरवाही, असावधानी, ये सब हिंसा के कारण हैं। प्रमाद हिंसा की रीढ़ है। श्रावक अपने घरों में, अपनी आजीविका में, अपने व्यवहार में, अपने खान-पान में कैसे यतना रखे, यह सबके लिए विचारणीय विषय है। श्रावक भंड उपकरण यतना से ले, यतना से प्रयोग करे, यतना से पुनः सही स्थान पर रखे।

इन्हीं बातों के लिए संक्षिप्त में अलग-अलग विषयों पर सारगर्भित विवेचन आगे दिया जा रहा है। इस अनुसार कार्य करने से काफी हद तक हम अनर्थ दंड से बच सकते हैं। प्रतिमा शतक में कहा है -

जयणेह धम्म जयणी, जयणा धम्मस्स पालणी चेव।
तव वुड्ढिकरी जयणा, एगंत सुहावहा जयणा।।

अर्थात् - यतना धर्म की जननी है और यतना ही धर्म का रक्षण करने वाली है। यतना से तप की वृद्धि होती है और वह एकांत रूप से सुख देने वाली है।

दशवैकालिक सूत्र अध्ययन ४ गाथा ७-८ में यतना के लिए आगमकारों ने अत्यन्त प्रेरक गाथा फरमाई हैं -

कहं चरे कहं चिट्ठे, कहमासे कहं सए।
कहं भुंजंतो भासंतो, पावं कम्मं न बंधइ।।७।।

अर्थात् - कैसे चले? कैसे खड़े रहे? कैसे बैठे? कैसे सोये? तथा किस प्रकार भोजन और भाषण करें कि जिससे पाप कर्म का बंध न हो?

जयं चरे जयं चिट्ठे, जयमासे जयं सए।

जयं भुंजंतो भासंतो, पावं कम्मं न बंधइ ॥८॥

अर्थात् - यतना से चले, यतना से खड़े हो, यतना से बैठे, यतना से सोवे। यतना से भोजन और भाषण करने से पाप कर्म का बंध नहीं होता है।

हमारे दैनिक जीवन व्यवहार में उपयोग की कमी के कारण नहीं चाहते हुए भी अनेक निरपराध जीवों की विराधना, हिंसा आदि होती है। इस पुस्तिका में हमारे घरों, दफ्तरों, दुकानों, धर्म स्थानों आदि में होने वाले जीवों की उत्पत्ति के कारण व उनसे बचने के सरल उपाय प्रस्तुत किये गये हैं। इस छोटी-सी पुस्तिता का गहनता से अध्ययन कर व हमारे जीवन व्यवहार में प्रस्तुत विचारों को क्रियात्मक रूप देकर हम अनन्त जीवों की हिंसा से बच सकते हैं, अनावश्यक कर्म बंधन से बच सकते हैं।

जीव हिंसा छोड़ दे

अपार धन तेरे पास,
अनन्त बली आत्मा।
क्यों माने दुःख ही दुःख,
क्यों कहे गरीब हूँ।
कषाय को छोड़ दे,
स्वस्थ हो जायेगा।
संतोष को धार ले,
सुखी बन जायेगा।
विषयासक्ति को दूर भगा,
जीव हिंसा छोड़ दे।
कमलवत् जीवन बना,
मोक्ष पा जायेगा।

यतना के उपकरण

१. **पानी छानने का गरणा (गलना)** - पानी छानने हेतु सुयोग्य कपड़े का प्रयोग करें। बारीक, ठोस (मफ) बुनावट वाले कपड़े या लॉन का कपड़ा पानी छानने में प्रयुक्त करें। ध्यान रखें कपड़े में छिद्र तो नहीं हैं या अधिक पुराना कपड़ा जिसके तंतु बिखर रहे हैं वैसा कपड़ा काम में न लें। नायलोन की बिना छेद वाली डबल छलनी आदि का प्रयोग भी पानी छानने में किया जा सकता है। गरणे के लिए लॉन वाला कपड़ा सर्वाधिक उचित उपकरण है।

२. **मूलायम स्पर्श वाला झाडू (जैन झाडू)** - कचरा निकालने में मुलायम स्पर्श का झाडू का प्रयोग करें ताकि जीवों की रक्षा हो सके। कचरा निकालते एवं पोंछा लगाते समय जीवों के बचाव का पूर्णतः ध्यान रखें।

३. **पूंजणी/डांडिया** - धार्मिक प्रवृत्तियाँ करते समय-प्रमार्जना के लिये जरूरी उपकरण। जैसे संत मुनिराज ओघे (रजोहरण) का प्रयोग करते हैं वैसे श्रावक वर्ग जीवों की यतना में पूंजणी व डांडिये के प्रयोग का पूर्णतः लक्ष्य रखें।

४. **छलनी** - १. अनाज, आटा, मसाला आदि छानने हेतु विविध प्रकार की छलनियाँ। बारीक, मोटे तार की अनेक छलनियाँ पदार्थ के अनुसार प्रयुक्त हों। मैदे की छलनी, दाल धोने की छलनी, चावल गेहूँ छानने की छलनी आदि का उपयोग विवेक पूर्वक करें। २. दूध घी एवं चाय आदि छानने की छलनी।

५. **चंदरवाँ** - खुले स्थानों में रसोई नहीं बनावें। बनती हुई रसोई में ऊपर से जीव जंतु न पड़े इसके लिए बांधे जाने वाला कपड़ा।

६. **पोंछे का कपड़ा** - साफ सुथरा पोंछे के कपड़े का प्रयोग करें। कपड़े के प्रयोग के पूर्व एवं पश्चात् इस बात का ध्यान रखें कि उसमें कोई जीव जन्तु तो नहीं हैं, पोंछे के कपड़े को प्रयोग के बाद धूप में सुखाने का लक्ष्य रखें ताकि जीवोत्पत्ति न हो।

७. **जाले निकालने का झाडू** - घर के कोनों में, छत के आस-पास मकड़ी के जाले आदि आ जाते हैं, उन्हें निकालने के लिए लम्बे डण्डे के साथ नरम स्पर्श वाले झाडू का प्रयोग करें। मकड़ी की रक्षा का विवेक रखें।

८. **झटकास** - डण्डी पर बंधा कपड़ा जिससे खिड़कियाँ दरवाजे साफ किये जाते हैं। झटकास का प्रयोग करने के पहले अच्छी तरह देख पूंज लेवे कि उसमें कोई जीव जन्तु तो नहीं है।

९. **नर्म पूंजणी** - जो गैस का चूल्हा आदि साफ करने के काम आती है।

चिंतन के द्वार से

सत्य मार्ग का मंडन और असत्य मार्ग का खंडन करना यह जिनशासन में एक महान् गुण तथा शासन की प्रभावना और तीर्थंकर नाम गोत्र बांधने का कारण माना जाता है जबकि आज अपने ही समाज के अधिकांश लोग इसे ईर्ष्या, निंदा और द्वेष रूप में गिनते हैं।

एक साधु, एक साध्वी, एक श्रावक और एक श्राविका भी यदि आज्ञा युक्त है तो वह संघ है क्योंकि आज्ञानुसार चलने वाला संघ ही संघ है अन्यथा तो वह हड्डियों का ढेर हैं।

धर्म में अल्पमत या बहुमत नहीं चलता, इसमें तो मात्र आगम मत ही चलता है। यह जीव को कभी भी नहीं भूलना चाहिये।

जीवोत्पत्ति न हो-इसका उपाय

यतना एवं विवेक जीवोत्पत्ति न हो इसके प्रमुख उपाय हैं। उपचार से भली सावधानी (Precution is better than cure) जीवोत्पत्ति होने के बाद जीवों की रक्षा करना अत्यंत कठिन है, इसलिए हम पहले से ही सतर्कता बरतें जिससे जीवोत्पत्ति ही न हो। इस बात की सावधानी रखना सबसे उत्तम है।

१. घर को पहले से ही पूर्णतः स्वच्छ रखने का विवेक रखें ताकि जीवोत्पत्ति न हो। गंदगी जीवोत्पत्ति का कारण है।

२. पानी का उपयोग कम से कम हो, इसका विवेक रखे। लगातार गीलेपन से अधिक मात्रा में जीव उत्पन्न होते हैं। गीले स्थान को सूखने का मौका दें।

३. खाद्य पदार्थ बाहर न डालें। इनकी गन्ध से अनेक जीव दौड़े चले आते हैं।

४. झूठा न डालें। थाली धोकर पीने की आदत बनाएं। झूठे खाद्यान्न मोरी में जाने से जीवोत्पत्ति हो जाती है।

५. खिड़कियाँ आदि खुली रहने से शुद्ध हवा एवं प्रकाश आता रहता है। सूर्य प्रकाश की रुकावट से जीवोत्पत्ति की संभावना बढ़ती है।

६. खाद्य पदार्थों के बर्तन खुले न रखें। उन्हें उचित ढक्कनों से ढ़कें। बर्तनों के ढ़क्कनों को टाईट बन्द रखें। अचार की बरणी, तेल के बर्तन, घी के बर्तन, आटा आदि सभी पदार्थ ढकने का पूर्ण विवेक बरतें। दूध, सब्जी, चावल आदि के बर्तन खुले न छोड़ें।

७. खाद्य पदार्थ-उनकी समय सीमा से अधिक समय तक न रखें।

८. खाद्य पदार्थों की समय-समय पर देखभाल करने एवं धूप आदि में देने से जीवोत्पत्ति नहीं होती है।

९. फर्नीचर, बिस्तर, ओढ़ने के कम्बल, चद्दर, रजाई का समय-समय पर प्रतिलेखन-प्रमार्जन करते रहे।

१०. दीवार, छत आदि की सफाई का इस प्रकार विवेक रखे जिससे जाले आदि न पड़े।

११. प्रत्येक वस्तुओं को यथास्थान व्यवस्थित रखें, ताकि समय पर मिल सके। वस्तुएं कबाड़ी की दुकान की तरह न रखें। जहाँ से वस्तु ले, वहीं पर वस्तु रखने की आदत डालें।

१२. पीने का पानी, रसोई बनाने में प्रयुक्त पानी की मटकी, बर्तन आदि ज्यादा समय तक गीले न रहे इसका पूर्ण विवेक रखें। लम्बे समय तक गीले रहने पर लीलन फूलन की संभावना रहती है।

१३. चाय, काफी की ग्लास, कप आदि पीकर वहीं न छोड़ें।

१४. रात्रि को झूठे बर्तन न रखें।

१५. रसोई घर की सफाई का पूर्ण उपयोग रखें।

१६. संडास, स्नान घर की सफाई का विवेक रखें।

१७. बेडरूम एवं घर के फर्नीचर की सफाई का विवेक रखें ताकि जीवोत्पत्ति न हो।

१८. जहाँ बर्तन धोये जाते हैं उसके आसपास लीलन-काई की संभावना रहती है। अतः लीलन फूलन की उत्पत्ति न हो इसकी सजगता रखें।

१९. वस्तुओं को रखने में सचित्त-अचित्त पदार्थों को एक साथ न रखें।

२०. प्रातः उठते ही बर्तन, बिस्तर, ओढ़ने की कम्बल आदि पुनः व्यवस्थित रखने की आदत डालें।

२१. अंधेरे में झाड़ू, पोंछा, कपड़े धोना, भोजन बनाना आदि कार्य न करें।

२२. रात में व अंधेरे में आहार पानी का प्रयोग न करें।

२३. पानी पीने के बाद ग्लास उल्टी रखे ताकि जीवों की विराधना न हो।

२४. कोई भी पदार्थ यदि बाहर डालना भी पड़े तो उन्हें प्लास्टिक थैली में रख कर नहीं डालें। अज्ञानी जानवर खाद्य पदार्थों को थैली सहित ही खा जाते हैं जिससे उनके पेट में गांठें हो जाती है एवं वे भयंकर वेदना का अनुभव करते हैं।

श्रावक-श्राविका संगठन अपनी पहचान बनाएं

आगम में दो शब्द आते हैं अनुस्रोत और प्रतिस्रोत। अनुस्रोत का आशय है कि जिस दिशा का प्रवाह हो उसी ओर गतिशील होना। जबकि प्रतिस्रोत का आशय होता है प्रवाह के विपरीत दिशा में गति करना। अनुस्रोत का अनुगमन/अनुसरण करने में कोई खास कठिनाई नहीं होती है। किन्तु प्रतिस्रोत में गति करने में कठिनाई ही नहीं अपितु प्रबल पुरुषार्थ की आवश्यकता पड़ती है।

आज हमारे आध्यात्मिक क्षेत्र में अनुस्रोत का प्रभाव चल रहा है। आज द्रव्य, क्षेत्र, काल भाव का बहाना लेकर हमारा उपास्य वर्ग भगवान् द्वारा प्ररूपित मार्ग से विस्मृत हो अपनी सुविधानुसार उसमें परिवर्तन कर रहा है। परिणाम स्वरूप नित नई आगम विपरीत प्रवृत्तियों का प्रवेश इस वर्ग में हो रहा है। उपासक वर्ग भी इनकी आगम विपरीत प्रवृत्तियों का समर्थन कर जैन संस्कृति के अवमूल्यन में सहयोगी बन रहा है। इस प्रकार अनुस्रोत में बहने के दूरगामी परिणाम विभीत्स होंगे। आज आवश्यकता इस बात की है कि आगम विपरीत प्रवृत्तियों में न बह कर उनका प्रतिकार करें, जिन शासन की रक्षा में सहयोगी बनें। यदि हमारे प्रयास से जिनशासन का थोड़ा बहुत भी अवमूल्यन रूकता है तो यह हमारे लिए बहुत बड़ी शासनसेवा होगी।

यतना की जड़ी बूटियाँ

१. **मोर के पंख** - इसके कारण से सांप व छिपकली भाग जाते हैं।

२. **काली मिर्च** - केसर की डब्बी में काली मिर्च के दाने डालने से जीवोत्पत्ति नहीं होती है।

३. **डामर की गोली** - कपड़ों, पुस्तकों के बेग, अलमारी आदि में डामर की गोली रखने से जीवोत्पत्ति नहीं होती।

४. **पारे की गोलियाँ** - अनाज में पारे की गोली डालने से अनाज सड़ता नहीं है तथा जीवोत्पत्ति नहीं होती है।

५. **एरण्डी का तेल** - गेहूँ, चावल, दाल आदि पर यह तेल लगा देने से जीव पैदा नहीं होते हैं। इस तेल की गंध से चींटियाँ दूर चली जाती हैं।

६. **तम्बाकू** - कपड़ों अथवा पुस्तकों की अल्मारी में तम्बाकू के सूखे पत्ते रखने से जीवोत्पत्ति नहीं होती है।

७. **चूना** - दिवारों पर चूना पोतने से जीवोत्पत्ति नहीं होती है। लकड़ी के फर्नीचर पर चूना घिसने से जीवोत्पत्ति नहीं होती है।

८. **घासलेट** - केरोसिन के तेल से मच्छर आदि भाग जाते हैं एवं उसकी गंध से चींटियाँ आदि नहीं आती है।

९. **कपूर की गोली** - कपूर की गोली की गंध से चूहे दूर भाग जाते हैं। चूहों का आना-जाना दौड़ना बंद हो जाता है। कपूर के पाउडर की गंध से चींटियाँ नहीं आती हैं। कपड़ों की अल्मारी में कपूर की गोली रखने से जीवोत्पत्ति नहीं होती है।

१०. **राख** - चींटियों की लाईन के आस-पास राख डाल देने से चींटियाँ चली जाती है। अनाज में राख मिलाकर रखने से अनाज सड़ता नहीं है।

११. **कंकू/हल्दी** - इसके प्रयोग से चींटियाँ नहीं आती है। मिठाई के बर्तनों के आस-पास हल्दी डाल दें, चींटी नहीं आयेगी।

१२. **गेरू (लाल रंग का चूना)** - दिवार पर पोतने से उदही नहीं लगती है।

१३. **रंग/वार्नीश** से लकड़ी पर निगोद एवं जीवोत्पत्ति नहीं होती है।

१४. **सूखे नीम के पत्ते** - अनाज, कपड़ों, पुस्तकों आदि में रखने से जीवों की उत्पत्ति नहीं होती है।

सम्यग्-दर्शन का महत्त्व

जैन धर्म में सम्यग्-दर्शन का महत्त्व, ज्ञान और चारित्र से भी बढ़ कर बताया गया है। वास्तव में सम्यग्-दर्शन स्वयं गुणाकर है। सम्यग्-दर्शन रूपी स्वर्ण-पात्र में रहा हुआ चारित्र रूपी अमृत ही मुक्ति रूपी अमर फल देता है। इसके बिना चारित्र की विशुद्ध क्रिया भी मुक्ति रूपी उत्तम फल नहीं दे सकती। सम्यक्त्व तथा सम्यक्त्व पूर्वक की हुई देशविरति या सर्वविरति की सामान्य साधना भी आत्मा को मुक्ति के निकट ले जाती है, किन्तु सम्यक्त्व रहित की हुई उत्तम साधना भी संसार में रूलाती है।

जे या बुद्धा महाभागा, वीरा असमत्तदंसिणो।
असुद्धं तेसिं परक्कंतं, सफलं होइ सव्वसो॥
जे या बुद्धा महाभागा, वीरा सम्मत्तदंसिणो।
सुद्ध तेसिं परक्कतं, अफलं होइ सव्वसो॥

जो व्यक्ति महान् भाग्यशाली और जगत् में प्रशंसनीय है, जिसकी वीरता की धाक जमी हुई है, किन्तु वह धर्म के रहस्य को नहीं जानता है और सम्यग्दृष्टि (समकित) से रहित है, तो उसका किया हुआ सभी पराक्रम-दान, तप आदि अशुद्ध है-कर्म-बन्ध का ही कारण है और जो बुद्धिशाली भाग्यवान् सम्यग्-दर्शन से युक्त है, उसके व्रतादि सब शुद्ध हैं।

निगोद से रक्षा के उपाय

वर्षा ऋतु में घर के कम्पाउन्ड में पुरानी दिवारों पर, छत पर, हरी, काली, भूरी आदि रंगों की काई (लीलन) जम जाती है, वह निगोद है। आलू, प्याज आदि की भांति लीलन फूलन भी अनंतकाय है। उसके एक सूक्ष्म कण वाले स्थान पर भी अनंत जीवों का निवास होता है। उसके ऊपर चलने से, सहारा लेकर बैठने से, उस पर वाहन चलाने से, उस पर कोई वस्तु रखने से, पानी गिराने से अनंत जीवों की हिंसा होती है।

१. जो जगह अधिक समय तक गीली रहती है, वहाँ लीलन की उत्पत्ति होती है। स्नानघर पूरे दिन गीला रहे तो उसमें भी लीलन की उत्पत्ति की संभावना रहती है। घर का कोई भी स्थान लगातार गीला न रहे, इसका उपयोग रखें।

२. नीचे देखकर चलें। वर्षा ऋतु में सड़क के किनारों पर भी काई जम जाती है। काई से बचकर चलें। काई में चलने से अनंत काय की हिंसा भी होती है तथा कभी-कभी पैर फिसलने से गिर भी सकते हैं, चोट लग सकती है, फ्रेक्चर हो सकता है।

३. कम्पाऊण्ड में चलने के रास्ते पर निगोद उत्पन्न न हो, इस हेतु वर्षा के मौसम से पूर्व अचित्त मिट्टी बिछाने, डामर का पट्टा, रंग का पट्टा एवं तेल आदि के प्रयोग का विवेक रखें, ताकि काई नहीं जमे।

४. एक बार निगोद हो जाय, उस पर डामर का पट्टा, कलर का पट्टा या मिट्टी न डाले। स्वाभाविक तरीके से वह सूख न जाय तब तक कोई उपाय न करें।

फफूँदी से रक्षा के उपाय

फफूँदी (फूलण) सामान्यतः विकृत पदार्थों पर आती है। यह खास कर चौमासे में विशेष होती है। खाने-पीने के पदार्थों में विविध रंगों की फफूंदी आ जाती है। सामान्यतः यह सफेद रंग की दिखाई देती है। खाद्य पदार्थ, दवाई की गोलियाँ, पुस्तक की जिल्द पर, चमड़े के पट्टे पर, वस्तु के गीलेपन के कारण फफूंदी आ जाती हैं। यह फफूंदी अनंतकाय है। इसके सूक्ष्म कण में अनंत जीव होते हैं। फफूँदी न हो इसकी सावधानी निम्न प्रकार से की जानी चाहिये -

(१) खाद्य पदार्थों को चुस्त (टाइट) ढक्कन वाले साधन में बंद कर रखें। (२) फफूँदी उत्पन्न हो ऐसे पदार्थों को गीलेपन के वातावरण में न रखें। डिब्बे में से वस्तु लेते समय गीले हाथ का प्रयोग न करें। (३) वर्षा ऋतु के बाद पापड़, खाद्य पदार्थ, मसाले आदि को धूप में रखें। उसमें आयी हुई सीलन निकल जाने से फंफूद आदि की उत्पत्ति नहीं होती है। (४) मिठाई आदि का प्रयोग करने से पूर्व सावधानी से देखे कहीं फफूँदी तो नहीं आई। लड्डू आदि को तोड़ कर निरीक्षण करे। (५) जिस चीज पर फफूंदी जमी हो उसे अलग ही रखें तथा उसे कोई स्पर्श न करें इसका पूरा ध्यान रखें। (६) फफूँदी वाले पदार्थों को छाया में विवेक से इस प्रकार रखे कि जीव विराधना न हो। (७) बाजार के तैयार बड़ी, पापड़, मिठाई आदि न खाएँ। (८) छुंदा, मुरब्बा आदि धूप में न रखने से या चूल्हे पर चासनी बनाते समय चासनी कच्ची रहने से फफूंदी हो जाती है। (९) गरम-गरम मिठाई डिब्बे में रख देने से भी फफूंदी हो जाती है। (१०) बूंदी में चासनी कच्ची रह जाय तो भी फफूंदी हो सकती है। (११) बाहर से आने के बाद पसीने से गीले कपड़ों को समेटें नहीं, सूखने दें।

पानी (अप्काय) के जीवों की रक्षा करें

कच्चे पानी की प्रत्येक बूंद में असंख्य अप्काय एकेन्द्रिय जीव हैं। इसलिए पानी का फालतू व निरर्थक उपयोग तो करना ही नहीं चाहिये। अत्यन्त सूक्ष्म शरीर वाले होने से वे असंख्य जीव एक बूंद में समा जाते हैं। बिना छाने हुए पानी में कई त्रस जीव भी होते हैं। पानी के पड़े रहने से गन्दगी तथा मच्छर हो जाते हैं। पानी यदि एक ही जगह लगातार पड़ा रहे तो कांई (लीलन) हो जाती है। पीने का पानी ढक कर रखें। साबुन अप्काय के जीवों के लिए शस्त्र के समान है। पानी के जीवों की रक्षा निम्न प्रकार से की जा सकती है -

१. पानी का उपयोग कम से कम हो इसका लक्ष्य रखें, उस के उपयोग का महत्त्व घी से भी अधिक समझे।

२. बिना छाना पानी उपयोग में न लेवें।

३. नल को खुल्ला न छोड़े। नल में से पानी टपकता हो तो वासर बदलें।

४. दाढ़ी करते समय, दातुन करते समय, स्नान करते समय, हाथ मुँह धोते समय, पानी को ग्लास/बाल्टी में लेकर ही उपयोग करें। इन सभी प्रवृत्तियों में नल खुल्ला रखकर प्रयोग न करें।

५. स्नान के पानी की मर्यादा रखें। तालाब, स्वीमींग पूल, टब, फव्वारे के नीचे स्नान न करें। स्नान में मर्यादित पानी के उपरान्त प्रयोग न करें।

६. बार-बार नहाने या हाथ मुँह धोने की आदत न रखें।

७. पानी व्यर्थ न ढुले इसकी सतर्कता रखें।

८. पानी के नल लीक न हो इसका ध्यान रखें, बने जहाँ तक घर में कम से कम नल रखें।

९. घर से निकलते समय या रात्रि को सोने के पहले, अवश्य नल का निरीक्षण करें, कहीं कोई नल खुल्ला तो नहीं रह गया?

१०. बने जहाँ तक साबुन का उपयोग न करें। साबुन त्वचा को नुकसान पहुँचाता है।

११. वर्षा में जान बूझकर न भीगें।

१२. पानी को गुब्बारों में भरकर फोड़े नहीं।

१३. बरसात में पानी भर गया हो, उसमें चलना अनिवार्य हो तो पूर्ण सावधानी व सतर्कता से विवेक पूर्वक चलें ताकि जीव विराधना कम से कम हो।

१४. गीजर में अनछना पानी गरम होने से हजारों लाखों त्रस जीव गर्मी से समाप्त हो जाते हैं अतः गीजर प्रयोग से बचें।

१५. वॉटर कूलर, एयर कूलर आदि में पानी के एवं त्रस जीवों की अधिक विराधना होती है। अतः इनके सेवन से बचें।

१६. पानी छानने के बाद उसकी जीवाणी को ऐसे स्थान पर परठें ताकि उन जीवों की विराधना न हो एवं गरणा जल्दी सूखे ऐसा विवेक रखें।

१७. घर से निकलते समय छाने हुए पानी का वॉटर बेग व गरणा साथ लें जिससे बाहर अनछने पानी के प्रयोग से बच सकें।

१८. बिसलरी आदि, मिनरल वॉटर सभी अनछना पानी है पाऊच का पानी भी अनछना पानी है। अतः प्रयोग न करें।

१९. घर के बर्तन धोने, कपड़े धोने में, आवश्यकतानुसार बर्तन में पानी लें, नल खुल्ला छोड़ व्यर्थ पानी न बहायें।

२०. पानी से पोंछे लगाते समय जीव-जन्तु की रक्षा की पूर्ण सतर्कता रखें।

२१. भोजनादि विवेक से करें, कोई चीज बिखरें नहीं। जिससे बार-बार सफाई के लिए पानी का उपयोग न करना पड़े।

२२. जहाँ तक हो स्नान से बचें। कम से कम पानी का प्रयोग हो इसका लक्ष्य रखें यदि आवश्यक हो तो गीले कपड़े से भी शरीर की सफाई की जा सकती है।

सम्मूर्च्छिम जीवों को पहचानों एवं रक्षा करो

मनुष्य के मल, मूत्र, कफ, नाक का श्लेष्म, रक्त, पीप आदि स्थान-जिनका शरीर से सम्बन्ध छूट-जाने के अंतर्मुहूर्त्त (२ समय से लगा कर १ समय कम ४८ मिनिट के अंदर-अंदर के काल को अंतर्मुहूर्त्त कहते है) में अदृश्य काया वाले पंचेन्द्रिय सम्मूर्च्छिम मनुष्य उत्पन्न हो सकते हैं। ये जीव एक साथ में असंख्य उत्पन्न होते हैं। इन जीवों का आयु अन्तर्मुहूर्त्त से अधिक नहीं होता है। शरीर से विसर्जित अशुचि यदि सूख जाय तो उसमें सम्मूर्च्छिम उत्पन्न नहीं होते हैं। सम्मूर्च्छिम अपनी लापरवाही, उपेक्षा तथा शहरों की गटर व्यवस्था से उत्पन्न होते हैं। रक्षा के उपाय निम्नलिखित हैं -

१. बने जहाँ तक मल-मूत्र आदि प्रकाश युक्त खुले स्थान पर परठें जिससे वे तुरंत सूख जाय।

२. मृत्यु के बाद शव को अधिक से अधिक देर न रोकें। मनुष्य के शव में मृत्यु के कुछ समय बाद सम्मूर्च्छिम मनुष्य उत्पन्न हो सकते हैं व अधिक समय रोकने पर बढ़ते जाते हैं।

३. कफ/श्लेष्म आदि थूंकने के बाद जीवोत्पत्ति न हो ऐसा विवेक रखें।

४. मलादि अशुचि पदार्थों के सूखने के बाद पुनः गीला होने पर सम्मूर्च्छिम मनुष्य उत्पन्न हो सकते हैं अतः उसका विवेक रखें।

५. नाक की सफाई से सम्बन्धित रूमाल को सूखने दें।

६. एक बार अब्रह्मचर्य का सेवन करने पर असंख्य सम्मूर्च्छिम व लाखों सन्नी जीवों की हिंसा होती है। अतः अधिक से अधिक ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिये।

चींटी (कीड़ी) की रक्षा करें

चींटी अत्यन्त छोटा प्राणी है। काले और लाल रंग की चींटियाँ घरों में मिलती है। ये अकेले एवं समूह में पायी जाती हैं। ये तेइन्द्रिय त्रस जीव हैं। अत्यन्त कोमल कायावाली होती है। मात्र दबने से मर जाती है। चींटी के घ्राणेन्द्रिय (नाक) अत्यन्त तीव्र होती है। मीठे एवं चिकने पदार्थों की ओर शीघ्र आकर्षित होती है। खाद्य पदार्थों के कण गिर जाने से जल्दी से चींटियों का समूह इकट्ठा हो जाता है। लाल कीड़ी अपेक्षाकृत छोटी होती है। लाल कीड़ी का डंक तीव्र होता है। कई बार चमड़ी पर चिपक जाती है। चिपकी कीड़ी को बचाने हेतु खूब धीरज एवं सावधानी रखनी पड़ती है। चींटी की रक्षा के सामान्य उपायः-

१. दूध, घी, शक्कर मीठे पदार्थ नीचे नहीं गिरे इसका विवेक रखें।
२. घर की फ्लोरिंग ऐसी हो कि चींटी तुरन्त दिखाई दे।
३. चलते समय नीचे देखकर यतना पूर्वक चलें।
४. जिस पदार्थ से आकर्षित होकर चींटियाँ इकट्ठी हो रही है उस पदार्थ को यतना से हटा दें तो चींटियाँ चली जाती हैं।
५. एरण्डी के तेल में आटे की गोलियाँ बनाकर रख देने से चींटियाँ नजदीक नहीं आती है।
६. आसपास में कंकु, हल्दी या राख डाल देने से चींटिया चली जाती हैं।
७, खाद्य पदार्थों में चींटी हो तो खूब सावधानी पूर्वक उपाय कर रक्षा करनी चाहिये।
८. ओडोमोस की गंध वाला कपड़ा ढ़क देने से डिब्बे में आई हुई चीटियाँ चली जाती हैं।
९. पानी में पड़ी हुई चींटी मरी हुई सी लगती है लेकिन हल्के हाथ से निकाल कर कपड़े पर रखने से ५-६ मिनिट में चलने लगती है।
१०. चींटी का पाउडर, लक्ष्मण रेखा आदि अत्यन्त जहरीले हैं, इसका उपयोग न करें।

मच्छर की रक्षा करें

छोटी-सी काया वाले मच्छर से कौन परिचित नहीं? कान के समीप मच्छर की गुनगुनाहट संगीत स्वर लहरी को पैदा करता है। मच्छर का डंक, निद्रा में बाधा उत्पन्न करता है। मच्छर हमारी निद्रा में बाधा उत्पन्न न करें एवं हमारे द्वारा उसकी हिंसा न हो, मच्छर की उत्पत्ति निवारण ही सर्वश्रेष्ठ उपाय है। मच्छर की काया अत्यन्त कोमल होती है। जरा-सा भारी स्पर्श होने से मच्छर मर जाता है। उठते-बैठते, सोते-जागते, करवट बदलते, असावधानी के कारण मच्छर मर जाते हैं। वस्तु के लेने, रखने, शारीरिक क्रियाओं में अविवेक से मच्छर की हिंसा संभव है। पंखें की चपेट से भी मच्छर मर जाते हैं। खुले बर्तन में रहे आहार-पानी, तेल, दूध के बर्तन में मच्छर गिर कर मर जाते हैं। अग्नि, गरम भोजन, गरम पानी में गिर जाने से मच्छर मरते हैं।

मच्छर की रक्षा के निम्न उपाय ध्यान देने योग्य हैं -

१. सूर्यास्त के कुछ समय पूर्व खिड़की, दरवाजें आदि बन्द रखने से मच्छर घर में प्रवेश नहीं करते हैं।

२. घर में सामान-वस्तुओं को अस्त-व्यस्त मत रखिये। खुल्ले कपड़े, थैले में भी मच्छर भर जाते हैं।

३. घर में तथा इर्द गिर्द बिल्कुल गदंगी न रहे इसका विवेक रखें।

४. खिड़कियाँ आदि में मच्छरों का प्रवेश न हो इसका विवेक रखें।

५. मच्छरदानी बांधकर सोने से, मच्छरों के उपद्रव तथा विराधना से बचा जा सकता है। किन्तु मच्छरदानी ऐसी हों जिसमें मच्छर न फंसे।

६. कोई भी वस्तु लेते समय या रखते समय, मच्छर दब न जाय, इसका पूर्ण ध्यान रखें।

७. आहार-पानी, तेल, दूध, सब्जी के बर्तन खुले न रखें।

८. गरम पानी को ठण्डा करते समय बर्तन के ऊपर जाली ढक कर रखें।

९. मच्छर मारने की दवा का उपयोग न करे एवं मारने की अन्य चेष्टाएं भी न करें।

१०. गुड़नाईट आदि का प्रयोग न करें-इनसे मच्छर मरते तो नहीं किन्तु मच्छर के अंग विकलांग बन जाते हैं। इनकी गंध से अपने स्वास्थ्य को काफी नुकसान होता है, खाँसी भी हो जाती है।

११. कई लोग मच्छर को मारते हैं और समझते हैं कि मलेरिया से छुटकारा पा लिया-ऐसी भ्रामक बातों से बचें।

हिंसात्मक प्रवृत्तियाँ कर रही, आर्य संस्कृति पर प्रहार,
तभी तो प्रचलन में आ गया, आज यह मांसाहार।
जिह्वा के वश होकर मानव, बाजी गया क्यों हार?
क्या पता नहीं उसे? स्वस्थ रखता है शाकाहार
करना चाहते हो यदि कुछ, तो करो अहिंसा प्रसार
दान 'अभय' का दो जीवों को, 'अहिंसा है तारणहार'
श्वासोश्वास के अनमोल खजाने को,
आरम्भ-परिग्रह, जीव हिंसा में न लूटाइए।
सामायिक स्वाध्याय में इसे निवेश कर
आध्यात्मिक पूंजी को बढ़ाइए।।

मक्खी की रक्षा करें

मक्खी प्रत्येक घरों में दिखाई देने वाला जंतु है। मक्खी उड़नशील प्राणी है। उड़ते हुए वह शरीर पर, कचरे पर, गंदगी पर, मिठाई पर एवं खाद्य पदार्थों पर बैठती है। इर्द-गिर्द यदि मक्खी की गुनगुनाहट सुनाई दे, बैठने सोने एवं खाना खाने में बाधा पहुँचाती है। मक्खी उड़ कर दूध, घी, तेल, पानी आदि में गिर जाय तो तुरन्त उसे निकाल कर बचाया जाना चाहिये। जहाँ अधिक गंदगी होती है वहाँ मक्खियाँ ज्यादा पैदा होती है। कचरा, केले के छिलके, श्लेष्म, मल आदि पर बहुत सारी मक्खियाँ एकत्रित होती हैं। गंदगी मक्खी का प्रसूतिगृह है। घर में गंदगी जितनी कम होगी उतनी मक्खी की उत्पत्ति कम होगी। मक्खी की रक्षा में निम्न बातें ध्यान देने योग्य हैं -

१. घर में गंदगी नहीं होने दें।

२. खाद्य पदार्थ तथा पानी से भरे बर्तन खुले नहीं रखें।

३. साबुन के पानी से भिगोये हुए कपड़ों की बाल्टी आदि खुले नहीं रखें।

४. भोजन करते समय, रसोई करते समय, कपड़े धोते समय मक्खी बीच में न आ जाय, आकर गीलेपन में न गिर जाय इसका उपयोग रखें।

५. खाद्य पदार्थ, पानी, घी, तेल में मक्खी गिर जाय तो तुरन्त यतना से बाहर निकालें। बाहर निकाल कर सूखे कपड़ें पर रखे थोड़ी देर बाद मक्खी उड़ने लग जायेगी।

६. घर में जो भी कचरा हो, उसे कचरे के डिब्बे में डालें। कचरे का डिब्बा ढक्कन युक्त हो।

खटमल (मांकण) की रक्षा करें

लकड़ी का पलंग, दीवार में रेखाएं, फर्नीचर, बिस्तर आदि खटमल के निवास स्थल हैं। लाल रंग के इस छोटे से जन्तु की सबसे प्रिय वस्तु है-मानव खून। रात्रि में सोते समय ये जन्तु काटते हैं, खून चूसते हैं। इनके डंक से नींद में बाधा पहुँचती है। सड़ी हुई लकड़ी भी खटमलों का खाना है। पसीने की गंध से खटमल आकर्षित होते हैं। जहरीली दवा छिटककर इन्हें मारना क्रूरता है। खटमल को खूब सावधानी पूर्वक पकड़ कर एक कटोरे में इकट्ठा कर सुरक्षित स्थान पर छोड़ देना ही सबसे सरल उपाय है। खटमल यदि मर जाय तो उसके शरीर में से अनेक खटमलों की फिर से उत्पत्ति संभव है। खटमलों की रक्षा के लिए निम्न उपाय ध्यान देने योग्य हैं -

१. जिस पलंग में खटमल उत्पन्न हुए हो तो उस पलंग का उपयोग कुछ दिनों तक पूर्णतया बंद कर दें। वे अपने आप चले जायेंगे।
२. बिस्तर, तकिये की खोली, चद्दर आदि अधिक गंदी रहने से भी खटमल की उत्पत्ति हो सकती है। इसलिए खोली, चद्दर आदि को गन्दी होने से बचावें।
३. जिन गद्दों, पलंग, फर्नीचर में खटमल हो जाय उन्हें धूप में न रखें। धूप में रखने से खटमल मर जाते हैं। इनका उपयोग न करे, छाया वाले निर्जन स्थान पर रखें।
४. भूल से भी खटमल मारने की दवा का प्रयोग न करें।
५. यदि खटमल की उत्पत्ति हो गई हो तो खूब हल्के हाथ से इकट्ठे कर कहीं दूर पुरानी लकड़ी में रख दें।

झिंगुर (कोंकरोच) की रक्षा करें

रसोई घर की अलमारी, बाथरूम के गटर आदि में बार-बार तांक-झांक करने वाले जिंगुर से कौन अपरिचित है ? अलमारी के किसी कोने से अचानक बाहर निकलते हुए इस जन्तु को देख कर कई लोग घबरा भी जाते हैं। यह जन्तु खास कर गंदगी में उत्पन्न होता है। रसोई घर में साफ सफाई न होने से, झूंठा खाना पड़ा रहने से, कचरा पड़ा रहने से, नालियों की सफाई न होने से, वहाँ जिंगुर उत्पन्न हो जाते हैं। इस जंतु के उत्पाद से बचने के लिए कुछ लोग दवा का प्रयोग करते हैं। दवा की गंध से आकर्षित होकर जिंगुर बाहर निकल आते हैं और इस जहर की चपेट में आकर मर जाते हैं। ऐसी दवा का उपयोग करना भयंकर क्रूरता है। निर्दोष उपायों को छोड़कर ऐसी हिंसक प्रवृत्ति अपनाने से दया गुण का दिवाला निकल जाता है। जिंगुर की रक्षा के लिए निम्न उपायों पर ध्यान दें -

१. वाश बेसिन, मोरी, बाथरूम में सतत गीलापन न रहने दें।

२. शाम को बर्तन धोने के बाद मोरी स्वच्छ रहे, इसका विवेक रखें, झूठा खाना पड़ा न रहने दें। आसपास में, ढक्कनादि पर घासलेट के तेल का पोंछा लगा दें।

३. गटर के ढक्कन को पैक बंद रखें। खोलते समय सावधानी रखें। ढक्कन खुलते ही जिंगुर बाहर निकल आते हैं। ढ़क्कन या पैरादि के नीचे दबकर जिंगुर मर न जायें, इसकी पूर्ण सावधानी बरतें।

४. एक कार्टून में नारियल के छिलके, पुराने कपड़े खाखरे या कड़क पूड़ी के टुकड़े रख दीजिये। इस डिब्बे को जिंगुर वाले स्थल पर रख दें। थोड़े ही दिनों में उसमें कोकरच भर जायेंगे। ४-५ दिन के बाद संध्या के समय इस डिब्बे (कार्टून) को दूर निर्जन स्थल पर यतनापूर्वक जंतुओं को खाली कर दें। डिब्बे में पुनः सारी चीजें रख कर, घर में फिर से ऐसे स्थल पर रखें चहाँ जिंगुर पूरी तरह से निकल जायेंगे।

५. "देवी का-महादेवी-प्रोड्क्टस" की दवा का उपयोग करने से घर में जिंगुर नहीं होते हैं। यह हर्बल मेडीसन है। यदि जिंगुर हो गये हैं तो इस दवा से चले जाते हैं। दवा उपलब्धि का स्थान-

'हुसेन मेनोर' नं० ४३ वमनजी पेटरी रोड़

फारसी जनरल हॉस्पिटल गली कैम्पस कार्नर, मुम्बई-३६

संगठन में ही शक्ति एवं सुरक्षा है

भगवान् ने चतुर्विध संघ की स्थापना क्यों की? संघ के चारों घटक एक-दूसरे के पारस्परिक सहयोग साधना-आराधना से स्वयं का व अपने सहयोगी के आत्म विकास के हेतु बने। हेतु तभी बन सकते हैं जब चारों घटक संघ और शासन के प्रति पूर्ण निष्ठ, समर्पित बने, जिन आज्ञा के प्रति सच्ची निष्ठा और समर्पणता से ही शुद्ध संगठन का आधार बनता है।

अलग-अलग तिनकें कोई सामर्थ्य नहीं रखते पर जब वे संगठित होकर रस्सी बनते हैं तो दुर्दान्त हाथी को भी बांध लेते हैं। हाथी की शक्ति भी उनके सामने घुटने टेक देती है।

हम सभी चतुर्विध संघ के घटक हैं। संघ के प्रति हमारे अनेक दायित्व हैं, संगठन की कमी हमें दायित्वों के प्रति लापरवाह बना रही है। पारस्परिक ईर्ष्या, जलन भावना से हम टूट रहे हैं इसी कारण जैनत्व में विकृतियाँ पनप रही है। सर्वप्रथम हमें जिन मत के वास्तविक स्वरूप को समझना है, समझ कर जीवन में उतारना है। जैसे गाड़ी में ब्रेक आवश्यक होता है, उसी प्रकार जीवन में धर्म आवश्यक है। बिना किनारे बांधी हुई नदी बाड़ के रूप में तबाही कर देती है और उसी नदी को बांध लिया जाय तो वह जमीन को शस्य-श्यामला बना देती है। आज हमारे पास भी श्रम, शक्ति की कमी नहीं है पर धर्म की जानकारी एवं आचरण के अभाव में वह शक्ति संगठन का रूप नहीं ले रही है।

हमें संगठन का महत्त्व समझ कर मात्र आत्म जागरणा के लक्ष्य को लेकर कार्य करना है। जिन आज्ञा सुरक्षित रही तो हम सुरक्षित रहेंगे। आज भौतिकता के वश हो धार्मिक क्षेत्र में विकृतियाँ विस्तृत प्रवाह का रूप ले चुकी है। इस प्रवाह को रोकने की क्षमता मात्र संगठन में ही है। अपने अहम् का त्याग करके ईंट से ईंट जुड़ने के सदृश्य संगठित हो, हम भी कार्य करें तो अब भी सफलता मिल सकती है।

उद्देहिका (दीमक या उदेहि) की रक्षा करें

दीमक एक सूक्ष्म जीव है। यह दिवालों पर, खाली पड़ी जमीन, फर्नीचर तथा पुस्तकों और कागज में पाई जाती है। एक बार इसकी उत्पत्ति होने के बाद यह लगातार बढ़ती ही चली जाती है। इसके क्षेत्र का भी निरन्तर विस्तार होता है। दीमक फर्नीचर तथा कागज को खा जाती है। दिवार को खाकर मकान को जीर्ण बनाती है। दीमक पर 'पेस्ट कन्ट्रोल' नामक दवा का प्रयोग करना, हिंसक तरीका है। जिस स्थान पर दीमक उत्पन्न हुई है, उस स्थान पर लकीर जैसे निशान हो जाते हैं, इससे ज्ञात होता है कि दीमक की उत्पत्ति हो चुकी है। प्लाईवुड़ में दीमक की उत्पत्ति की संभावना अधिक है। सागवान की लकड़ी में दीमक जल्दी नहीं होती। इसकी रक्षा के सम्बन्ध में निम्न उपायों पर ध्यान दें -

१. अलमारी में भरी पुस्तकों को थोड़े-थोड़े समय में पुस्तकों को बाहर निकाल कर देखते रहें और यतना पूर्वक सफाई करें।
२. पुस्तकों की अलमारी में डामर की गोली रखने से या कपूर की गोली रखने से जीव नहीं पड़ते एवं दीमक होने की संभावना नहीं रहती।
३. गेरू या चुने के प्रयोग से दीमक से बचा जा सकता है।
४. पुस्तक या फर्नीचर पर दीमक हो जाय तो खूब यतना पूर्वक उन्हें लेकर वृक्ष के पास रख दे। जिस जगह दीमक की उत्पत्ति हुई थी वह जगह सम्पूर्णतया जीव रहित हो गई है ऐसा विश्वास होने के बाद ही वहाँ पर केरोसिन का पोंछा फेर दे तो दीमक फिर से नहीं होगी।

धान के कीड़ों की रक्षा करें

गेहूँ, चावल, आखे मूँग, मटर, चना, मोठ आदि में लटें आदि बहुत तरह के कीड़े उत्पन्न हो जाते हैं। अनाज यदि सड़ जाय तो उसमें बहुत जीव उत्पन्न हो जाते हैं। दालों में छोटे-छोटे छिद्र करके उसमें जीव उत्पन्न हो जाते हैं। चातुर्मास काल में दालों में जीवोत्पत्ति की अधिक संभावना रहती है। अनाज को एक बार साफ करने के बाद फिर से थोड़े दिनों में जीवों की उत्पत्ति संभावित है। गीलेपन के वातावरण में जीवोत्पत्ति विशेष होती है। अनाज को दलाने के पूर्व अनाज को ठीक ढंग से साफ करने का विवेक रखें। बिना सफाई के अनाज को नहीं दलावे या नहीं पिसावें। अनाज की सफाई नौकर के भरोसे नहीं रखें। अनाज के आटे में तो निश्चित समय के बाद जीव पड़ने की संभावना रहती है। बाजार के तैयार आटे एवं मेदे का प्रयोग न करें। धान्य के कीड़ों की रक्षा निम्न प्रकार से करें -

१. अनाज की सफाई करते समय पूर्ण सावधानी एवं विवेक रखें ताकि जीव विराधना न हो।

२. साफ किये हुए गेहूँ-चावल आदि में ऐरंडी का तेल लगा कर रखने से जीवोत्पत्ति नहीं होती है।

३. धान्य के साथ पारे की गोली रखने से जीव नहीं पड़ते हैं।

४. अनाज को पीसाने के पूर्व एक बार पुनः देखने का ध्यान रखावें।

५. अनाज साफ करने का काम नौकर के भरोसे न छोड़ें।

६. बाजार में उपलब्ध तैयार आटा व मैदा बिल्कुल उपयोग में न लें।

७. आटे की काल मर्यादा का पूर्ण ध्यान रखें।

८. अनाज को टाईट ढक्कन वाले साधन में सुरक्षित रखें।

९. होटलों में अनाज-आटे की यतना नहीं रखी जाती अतः होटल की चीजें खाने का पूर्णतः त्याग करें।

ईयल (लट) की रक्षा करें

यह जीव सृष्टि अत्यन्त विशाल है। तरह-तरह के पदार्थों में भिन्न-भिन्न प्रकार के विकलेन्द्रिय जीव उत्पन्न होते हैं। लट, जैसा खाद्य पदार्थ खाती है, उसी रंग में निष्पन्न होती है। हरी भाजी, सब्जी, मटर में हरे रंग की लट होती है। मिर्ची में लाल रंग की लट, चावल/आटे में सफेद लटें होती हैं। केसर में लाल लटें एवं लाल जीव उत्पन्न होते हैं। लापरवाही से साग सब्जी सुधारने से लट आदि कट जाती हैं। शाक सब्जी सुधारे बिना रांधने से उसमें रहे जीव-जन्तु एवं लटें मर जाती हैं। मटर, भिण्डी, शिमला मिर्च, कोला आदि में लट की संभावना रहती है। लट (बेइन्द्रिय) बहुत ही नरम प्राणी है। लट को बड़ी सावधानी से उठावें एवं यतना पूर्वक एकान्त स्थान एवं छाया में जिस वस्तु में लट हो उसका थोड़ा सा हिस्सा लेकर कागज में रखकर परठें। लट की सुरक्षा एवं बचाव के लिए निम्न बात ध्यान देने योग्य हैं -

१. जिन शाक सब्जियों में लट आदि की अधिक संभावना रहती है उन्हें त्याग दें।
२. फूल गोभी में बेइन्द्रिय जीव अधिक सूक्ष्म होते हैं तथा छिद्रों में जीव वास करते हैं, इसलिए फूल भोगी का प्रयोग न करें।
३. अन्य शाक सब्जी एवं फलों को उपयोग में लेने से पूर्व विशेष यतना रखें।
४. कोई भी शाक सब्जी ध्यान से देखें बिना उपयोग न लें।
५. भींड़ी जैसी सब्जी आदि में लट आदि त्रस जीवों की संभावना रहती है अतः उनकी विराधना न हो, इसका ध्यान रखें।
६. शाक आदि साफ करते समय बात करने की प्रवृत्ति न रखें। शाक को बराबर ध्यान पूर्वक देखें। यदि लट निकले तो उसे छोटे बर्तन

में लेकर सुरक्षित एवं छायादार स्थान पर रखें। ईयल (लट) वाले छिलके भी साथ में ले और ऐसे स्थान में छोड़ दें जहाँ उन्हें कोई दूसरा जानवर नहीं मार दें।

७. शाक को साफ करने का काम नौकर के भरोसे न छोड़ें।

८. मेंथी की भाजी में बहुत सूक्ष्म केसरी रंग की लटें होती हैं। अतः उनकी विराधना न हो इसका विवेक रखें।

९. पत्ता गोभी को काटते समय यह ध्यान रखे कि उन पत्तों में रही लट या अन्य त्रस जीवों की विराधना न हो।

नित्य भावना भाईये, सुखी रहे जग जीव
दया धर्म की भावना, भाय जीव संदीव॥
सत्य अहिंसा का करे, जीवन में व्यवहार।
जग-जीवन में हो उठे, समता का संचार॥

भगवन्! मुझे सुशीला....

भगवन्! मुझे सुशीला, विद्यावती बनाना।
दोनों कुलों की शोभा, लज्जावती बनाना॥
वनवास में पति का, जिसने न साथ छोड़ा।
सत्य-शील की विधाता, सीता सती बनाना॥
छोड़ो न शील हरगिज, संकट सहे हजारों।
सुभद्रा धारिणी या अंजना सती बनाना॥
कुष्ठी पति को पाकर, सेवा से मुख न मोड़ा।
वह धर्म-कर्म ज्ञाता, मैना सती बनाना।
"शिवराम" वेश धरकर जिसकी क्ररी परीक्षा।
सम्यक्त्व से डिगी ना, वो रेवती बनाना॥

ध्यान देने योग्य ज्ञातव्य
विविध यतना के सूत्र

१. खाद्य पदार्थ के बर्तन खुले नहीं रखें।
२. गैस-स्टोव का उपयोग करने से पहले उसे पूंजनी से पूंज लें।
३. सूर्योदय से पहले चूल्हा न जलावें।
४. सूर्यास्त के बाद चूल्हे का प्रयोग न करे।
५. लाईट-पंखें आदि का कम से कम आरंभ हो इसका विवेक रखें।
६. वेक्यूम क्लीनर का उपयोग न करें।
७. किसी भी स्थान का उपयोग करने से पहले यतना पूर्वक प्रतिलेखन-प्रमार्जन किया जाय।
८. झूठा न छोडें थाली धोकर पीने का लक्ष्य रखें।
९. जंतु नाशक दवाओं का व्यापार नहीं करें और न ही उपयोग करें।
१०. गरम पानी में ठण्डे पानी को न मिलावें।
११. साबुन, पानी के जीवों के लिए शस्त्र समान है। हो सके जहाँ तक साबुन का उपयोग टाल दें।
१२. प्राणियों के वध से बने साबुन, टूथ पेस्ट, खाद्य पदार्थ दवाई आदि का उपयोग न करें।
१३. फटाके कभी न फोड़ें।
१४. लीलन (काई) पानी और हरी घास पर न चलें।
१५. वनस्पति के पत्ते, डालिये आदि न तोड़ें।
१६. गर्भपात नहीं करावें और न ही ऐसी हिंसक सलाह किसी को देवें। ऐसी कुप्रवृत्तियों का दवाखाना नहीं चलाएं।

१७. पर्व तिथि-पर्युषण आदि में हरी सब्जी (लीलोतरी) का प्रयोग न करें।

१८. रसोई बनने से पहले आटा-धान्य आदि बिना छाना काम में नहीं लेवें।

१९. पर्व तिथि एवं पर्युषण के दिनों में अनाज न पिसाएं।

२०. खाली बर्तन आदि को उल्टे या आड़े रखे जिससे कि उसमें जीव जन्तु गिरने व मरने का आशंका नहीं रहे।

२१. पानी को खुला नहीं रखें।

२२. टेबल, पलंग आदि कोई सामान जमीन पर घसीटते हुए न खींचे उन्हें उठा कर रखें।

२३. अलमारी, बेग, डिब्बे आदि आधे खुले न रखें, उन्हें चुस्त बंद रखें।

२४. खाद्य पदार्थ नीचे ढुल न जाय, फैल न जाय इसकी सावधानी रखें।

२५. घर की छत, दिवारों की महीने में २-३ बार यतना पूर्वक साफ करते रहें।

२६. चींटियाँ निकल आये तो उस स्थान के आस-पास राख या चूना डाल दें, चींटियाँ चली जायेंगी। चलते फिरते इस बात का ख्याल रखे कि कहीं कोई चींटी पैरों तले दब कर मर न जाएं।

२७. शक्कर का उपयोग करने से पहले प्लेट में लेकर फैला कर देख लें, कोई जीव-जंतु तो नहीं हैं।

२८. शक्कर को साफ कर सूखे एवं टाईट ढक्कन वाले डिब्बे में रखें। गीलेपन से लट की उत्पत्ति हो सकती है।

२९. लाल रंग के बोर, लाल मिर्ची पाउडर में उसी रंग की बहुत जीवोत्पत्ति की संभावना रहती है, अतः उपयोग से पूर्व विवेक रखें।

३०. राई, मिर्ची, जीरा, धनिया आदि मसालों में उन-उन रंग के जीवों की उत्पत्ति की संभावना रहती है। यतना पूर्वक साफ करके उन्हें बर्तन में भर लेवें। मगर उपयोग करते समय बहुत नजदीक से जांच लेवें। इन्हें गीलेपन से दूर रखें।

३१. रसोईघर में लाईट को चूल्हें/गैस के ऊपर नहीं लगाएं। लाइट के आस-पास उड़ते जीव चूल्हें पर तथा तपेली आदि में गिर कर मर सकते हैं।

३२. चातुर्मास काल में केसर की पंखुडियों में उसी रंग के जीव होने की संभावना है। आई ग्लास से निरीक्षण कर ही उपयोग करें। केसर के डिब्बे में काली मिर्च के दाने रखने से जीवोत्पत्ति नहीं होती।

३३. लाईट के प्रकाश से बहुत सारे जीव घर में आ जाते हैं। संभव हो उतना लाईट का उपयोग कम करें। शाम को लाईट के उपयोग के पहले खिड़की दरवाजे आदि बन्द करें।

३४. पानी पीने के बाद ग्लास को उल्टा एवं पौंछ कर रखें।

३५. चातुर्मास काल में यात्रा न करें। संभव हो उतना टाले। एक ही स्थान पर रह कर धर्मध्यान करने का लक्ष्य बनावें।

३६. खाद्य पदार्थों को बिना देखे उपयोग में न लेवें।

३७. मिठाई, खांखरे, नमकीन, आटा, सोजी आदि की कालमर्यादा का ध्यान रखें।

३८. बाजार से तैयार मिठाई, आटा, मैदा का प्रयोग न करें।

३९. बाहर की तैयार वस्तुएं इन्स्टन्टफुड, आईसक्रीम, कोल्ड ड्रिंक्स, केक आदि का त्याग करें।

४०. विकृत दही छाछ का उपयोग न करें। दो रात्रि के बाद उनका उपयोग वर्जित करें।

४१. मावा (खोवा) यदि पूर्ण रीति से पका न हो तो उसमें जीवोत्पत्ति की संभावना रहती है। अतः प्रयोग के समय उपयोग रखें।

४२. दीवारों पर टंगे कलेण्डर, तस्वीर आदि की पीछे सफाई न होने पर कंसारी, मच्छर आदि हो जाते हैं। समय-समय पर उनकी सफाई का विवेक रखें।

४३. शहद/मक्खन आदि महाविगय हैं। अतः उन्हें त्यागें।

४४. प्लास्टिक की थैली आदि जहाँ तहाँ न फेकें। जानवरों के खाने में आने से उनकी मृत्यु का कारण बन सकती है। संभवतः प्लास्टिक बैग्स का उपयोग बंद करें।

४५. केले व छिलके आदि रास्ते पर न फेंके।

४६. मूंग/चना/गेहूँ को लम्बे समय भिगो कर खाने से उनमें अंकुर निकल आते हैं। अंकुरित सभी जीवों में अनंतकाय है।

४७. खमण/इडली/जलेबी का घोल रात्रि पर्यन्त न रखें।

४८. कपड़े धोने, डालने से पहले आगे पीछे उल्टा करके इनका बराबर निरीक्षण करें। जेब आदि में कोई चीज रह न जाय-पूरा ध्यान रखें।

४९. शरीर के किसी भाग में खुजली आ रही हो तो खुजलाने से पूर्व उस स्थान को देखें प्रतिलेखन प्रमार्जन करें ताकि जीव जंतु की विराधना न हो।

५०. दरवाजे-खिड़की को खोलते बंद करते समय पहले खटखटाए जिससे अगर छिपकली आदि कोई जीव-जंतु हो तो आवाज से हट जायेंगे।

५१. वस्तु जमीन पर रखने से पूर्व, पहले दृष्टि फिरा कर देख लें।

५२. चाय की सूखी पत्ती को छलनी से छान कर ही उपयोग करना चाहिये। चातुर्मास व नम वातावरण में छोटे जीवों के उत्पत्ति की संभावना रहती है।

५३. आटे को छान कर ही उपयोग में लेवें।

५४. बिसलरी आदि मिनरल वॉटर की सभी बोतलें एवं पाऊच अनछने पानी रूप हैं। अतः इनका प्रयोग न करें।

५५. शाम की रसोई होने के बाद बर्नल पर कपड़ा बांध कर ढक दें जिससे बर्नल के छिद्रों में छोटे जीव न घूसें। प्रातः गैस लगाने पूर्व बर्नल एवं पूरे गैस को यतना पूर्वक देख लें-पूंज लें।

५६. पहले दिन का छाना हुआ पानी का यदि दूसरे दिन उपयोग करें तो छानकर ही उपयोग में लें।

५७. चुन्दा-मुरब्बा की बरणी के मुँह पर ऐरण्डी का तेल लगा देने से चींटियाँ नहीं आती है।

५८. आईसक्रीम, चाकलेट, केडबरी, डेरी मिल्क, केक आदि में अखाद्य पदार्थों की सम्भावना है। अतः इनका त्याग करें।

५९. घर में यदि मटके ज्यादा हों तो उनके मुँह को कपड़े से बाँध दें ताकि उनमें मकड़ी आदि के जाले न हों।

६०. आखे काजू, पिस्ते का उपयोग न करें कारण कि काजू पिस्ते के बीच की पोलार में जालें एवं लट की सम्भावना रहती है। बीच में से दो फाड कर व देखकर उपयोग में लेवें।

६१. आज का छाना हुआ आटा आज ही उपयोग में लेवें, कल उपयोग के समय फिर से छानना चाहिये। आज का गूंथा हुआ आटा अगले दिन में उपयोग में नहीं लेना चाहिये।

६२. दिन भर में उपयोग किये हुए बर्तन आदि को धोने के बाद पोंछ लें, सही जगह पर उल्टा रख दें। ताकि बर्तन में गीलापन न रहे।

६३. बिना कारण अथवा मिट्टी या गन्दगी के उड़ाने हेतु अथवा वस्तु को ठंडी करने आदि कारणों में फूंक नहीं देवें, इससे असंख्य जीवों की विराधना हो जाती है।

६४. छींक, उबासी आदि के समय मुँह को रुमाल पर हाथ से ढक लेवें। खुले मुँह से छींक उबासी के कारण असंख्य जीवों की विराधना की संभावना है तथा कभी-कभी मुँह में मक्खी आदि भी प्रवेश कर जाते हैं।

६५. अनावश्यक बर्तन, कपड़ों के उपयोग से बचना चाहिये क्योंकि इनकी सफाई में पानी आदि की विराधना होती है। अनावश्यक जीव विराधना से बचना चाहिये। अगर हमने दस सदस्यों के परिवार में एक समय के उपयोग में एक-एक कटोरी का उपयोग कम किया तो एक वर्ष में ७२०० कटोरियों की सफाई में होने वाली जीव विराधना से बच गये, सफाई करने वाली बहिन के हित में हमने परोक्ष में सेवा कर दी। ऐसे हर एक कार्य में सजग रह कर जीव विराधना से बचने का लक्ष्य रखें।

६६. हरी मक्का के छिलके सहित भुट्टे, छिलके सहित हरे चने नहीं सेकना चाहिये। इनमें कभी-कभी लटें या छोटे त्रस जीव पैदा हो जाते हैं। बिना छिलका निकाले उनकी हिंसा हो सकती है।

६७. कोई भी वस्तु (कपड़ा, पुस्तकें, खाद्य पदार्थ आदि) बिना देखे धूप में नहीं रखे अन्यथा उनमें रहे हुए जीवों की विराधना हो सकती है।

६८. बाजार से हरी सब्जी, फल आदि खुले में (जैसे हाथ में या पारदर्शी थैली आदि में) नहीं लाना चाहिये, इससे दूसरों को भी लाने की प्रेरणा मिल सकती है।

धर्म को जीवन में उतारें

धर्म के वास्तविक स्वरूप को समझ कर उसके स्वरूप पर चिंतन करके, उसके प्रति जो हमारी उपेक्षा वृत्ति है, उसे हटाएं। लाखों-करोड़ों की सम्पत्ति हमारे पास होने के बावजूद भी हमें शांति और सुख का अनुभव नहीं हो रहा है, इस संदर्भ में क्या हमने कभी चिंतन किया है? इसका मूल कारण हमारे जीवन में धार्मिकता का अभाव है। जीवन में धर्म उतर जाने पर जीवन शांतिमय हो जाता है, फिर दुनियाँ की कोई भी वस्तु या परिस्थिति हमारे शांति के सरोवर में अशांति की लहरें उत्पन्न नहीं कर सकती है। चाहे कितनी ही ऊँची वस्तु क्यों न हो, उसे देखे चखे बिना उसके स्वाद का अनुभव नहीं होता। उसी प्रकार जब तक हम धर्म को देखें नहीं, समझें नहीं, परखे नहीं, जीवन में उतारे नहीं तब तक हमें उसकी विशिष्टता का अनुभव कैसे होगा? इसे दृष्टांत से समझाया है - एक गाड़ीवान, जिसको गुड़राब ही अधिक खाने को मिलती थी। गुड़राब को ही वह बड़ा मिष्टान्न मानता था। सेठ के प्रेम के कारण वह एक बार उसके एक परिचित सेठ के यहाँ गया। वहाँ उसके सामने मिष्टान्न युक्त भोजन परोसा गया। उसने सोचा ये क्या चूने पत्थर हैं, गुड़राब कहाँ है? तभी सेठ ने एक रसगुल्ला उसके मुँह में ठूँस दिया। जैसे ही उसने रसगुल्ले का स्वाद चखा, उसके स्वाद के सामने वह गुड़राब के स्वाद को ही भूल गया।

इसी प्रकार जब तक समझ पूर्वक धर्म को जीवन में उतारेंगे नहीं तब तक उसका स्वाद आने वाला नहीं है। मात्र बाहर से देखने-परखने से जैसे उस व्यक्ति को रसगुल्ले आदि स्वादिष्ट मिष्टान्न की कीमत या स्वाद समझ में नहीं आया उसी तरह मात्र सुनने समझने से ही धर्म का आनंद नहीं लिया जा सकता है वरन् उसको जीवन में उतारना आवश्यक होता है। एक बार यदि धर्म आचरण में आ जाये, व्रत नियमों को साहुकारी से पालन करें तो विषय भोग गुड़राब के सदृश फीके लगने लगेंगे। गजसुकुमाल को वासुदेव की ऋद्धि भी गुड़राब सरीखी फीकी लगी।

क्या वासुदेव की ऋद्धि कम होती है पर गजसुकुमाल को धर्म के सामने सब फीका लगा। वास्तव में यही सम्यग् दर्शन है, यही सच्ची धर्म श्रद्धा है। इसलिए व्रत नियमों का पालन मालिक बन कर दृढ़ता पूर्वक करें। धर्म जीवन में उतर जाने पर बाह्य परिस्थिति का अंतर मानस में असर नहीं होता। **धर्माचरण ही सच्ची शांति एवं आनन्द का राज मार्ग है।**

श्रावक की अहिंसा निर्देशिका

१. श्रावक 'पन्द्रह कर्मादान' वाले व्यवसाय न करें। कर्मादान वाले व्यवसाय मात्र जानने योग्य ही नहीं है बल्कि पूर्णतः त्यागने योग्य भी हैं।

२. श्रावक को अनंतकाय (जमीकंद) के सेवन का पूर्ण त्याग करना चाहिये तथा सामूहिक भोज आदि में भी जमीकन्द का उपयोग नहीं करना चाहिये।

३. श्रावक को आतिशबाजी के प्रयोग का, दूसरों से कराने का तथा इसके व्यवसाय का त्याग करना चाहिये।

४. श्रावक को होली नहीं खेलनी चाहिये।

५. श्रावक को किसी भी प्रसंग पर नाचने का, नचाने का तथा नाचने वालों पर पैसे वारने का त्याग करना चाहिये।

६. श्रावक को दिपावली के अवसर पर दीपक जलाने, लाईटें डेकोरेशन आदि नहीं करना चाहिए जो कि बहुत ही हिंसा का कारण होता है।

७. श्रावक को स्वयं के घर पर धार्मिक उत्सव, विवाह शादी आदि अवसरों पर फूल मालाएँ या फूलों का प्रयोग वर्जित रखना चाहिए क्योंकि फूल सचित्त होते हैं एवं फूलों की निश्राय में अनेक त्रस-स्थावर जीवों की हिंसा होने की संभावना होती है।

८. श्रावक को विवाह-शादियों में अनावश्यक लाइट डेकोरेशन नहीं करना चाहिए ताकि त्रस एवं स्थावर काय की हिंसा से बच सकें।

९. श्रावक को हरी घास, दूब आदि जहाँ हो उसके ऊपर विवाह शादियों में या अन्य उत्सवों पर भोजन, बैठने, चलने का निषेध रखना चाहिए जिससे अनर्थ दण्ड के पाप से बच सके।

नोट - श्रावक के समान श्राविकाओं के लिये भी उक्त नियम पालनीय हैं।

अहिंसा के प्रेरणा सूत्र

१. 'एवं खु णाणिणो सारं, जं ण हिंसइ किंचण।
अहिंसा समयं चेव, एयावंतं वियाणिया।।

- सूत्रकृतांग सूत्र १/१/४/१०

- ज्ञानी होने का सार यही है कि किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। अहिंसा मूलक समता ही धर्म का सार है। बस इतनी बात सदैव ध्यान में रखनी चाहिये।

२. सव्वे जीवा वि इच्छंति, जीविउं ण मरिज्जिउं।

- दशवैकालिक सूत्र ६/११

- सभी जीव जीना चाहते हैं, मरना कोई नहीं चाहता।

३. धम्मो मंगल मुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो।

- दशवैकालिक सूत्र १/१

- धर्म उत्कृष्ट (सर्वोत्तम) मंगल है। उस धर्म का लक्षण अहिंसा, संयम और तप हैं।

४. जयं चरे जयं चिट्ठे, जयमासे जयं सए।
जयं भुंजंतो भासंतो, पावं कम्मं ण बंधइ।।

- दशवैकालिक सूत्र ४/८

- यतना से चले, यतना से खड़ा हो, यतना से बैठे, यतना से सोवे, यतना से भोजन और भाषण करने से पाप कर्म का बंध नहीं होता है।

५. पावाणं जदकरणं, तदेव खलु मंगलं परमं।

- बृह. भाष्य ८/४

- वस्तुतः पाप कर्म न करना ही परम मंगल है।

६. **आयओ बहिया पास।** - आचारांग १/३/३

- अपने समान ही बाहर से दूसरे को देख।

७. **ते आत्तओ पासइ सव्व लोए।** - सूत्रकृतांग १/१२/१८

तत्त्वदर्शी (विद्वान्) समग्र प्राणी जगत् को अपनी आत्मा के समान देखता है।

८. **पाणवहो चंडो, रुद्दो, खुद्दो, अणारिओ, णिग्घिणो, णिस्संसो महब्भयो।** - प्रश्नव्याकरण १/१

प्राण वध (हिंसा) चंड है, रौद्र है, क्षुद्र है, अनार्य है, करुणा रहित है, क्रूर है और महा भयंकर है।

९. **दया मूलो भवेद्धर्मो, दया प्राण्यनुकम्पनम्।**

- आदि पुराण ५/२१

- धर्म का मूल दया है, प्राणी पर अनुकम्पा करना दया है।

१०. **ण य वित्तासए परं।** - उत्तराध्ययन २/२०

- किसी भी जीव को कष्ट नहीं देना चाहिए।

११. **ण हणे पाणिणो पाणे भयवेराओ उवरए।**

- उत्तराध्ययन ६/७

- जो भय और वैर से उपरत (मुक्त) है वे किसी प्राणी की हिंसा नहीं करते।

१२. **अणिच्चे जीव लोगम्मि, कि हिंसाए पसज्जासि?**

- उत्तराध्ययन १८/११

- जीव अनित्य है, क्षण भंगुर है फिर क्यों हिंसा से आसक्त होते हैं?

१३. **चरदि जंद जदि णिच्चं, कमलं च जले णिरुवलेवो।**

- प्रवचन ३/१८

- यदि साधक प्रत्येक कार्य यतना से करता है तो वह जल में कमल की भाँति निर्लेप रहता है।

१४. **धम्ममहिंसासमं नत्थि।** - भक्तपरिज्ञा ६१

- अहिंसा के समान दूसरा धर्म नहीं है।

१५. **जीववहो अप्पवहो, जीवदया अप्पणो दया होई।**

- भक्त परिज्ञा ६३

- किसी भी अन्य प्राणी की हत्या वस्तुतः अपनी हत्या है और अन्य जीव की दया अपनी ही दया है।

१६. **हिंसन्नियं वा न कहं कहेज्जा।** - सूत्रकृतांग १०/१०

- ऐसी कोई कथा-बात भी नहीं कहनी चाहिए, जिससे हिंसा को बढ़ावा मिले।

१७. **अहिंसैव जगन्माताऽहिंसैवानन्द पद्धतिः।**
अहिंसैव गतिः साध्वी श्रीरहिंसैव शाश्वती॥

- ज्ञानार्णव पृ. ११५

- अहिंसा ही जगत की माता है, अहिंसा ही आनन्द का मार्ग है, अहिंसा ही उत्तम गति है तथा अहिंसा ही शाश्वत लक्ष्मी है।

१८. **अदुआ अदिन्नादाणं।** - आचारांग १/३

- हिंसा, हिंसा ही नहीं, चोरी भी है।

१९. **यदि ग्रावा तोये तरति तरणिर्यद्यु दयति,**
प्रतीच्यां सप्तार्चिर्वदि भजति शैन्यं कथमपि।
यदि क्षमापीठं स्यादुपरि सकलस्यापि जगतः
प्रसूते सत्त्वानां तदपि न वधः क्वापि सुकृतं॥

- सिंदुर प्रकरण २६

यदि पानी में पत्थर तिर जावे, सूर्य पश्चिम में उदय हो जावे, अग्नि ठंडी हो जावे और कदाचित् यह पृथ्वी जगत् के ऊपर हो जावे तो भी हिंसा में धर्म नहीं होता है।

अहिंसा के दोहे

१. जीवों की रक्षा करें, मैले ठण्डी छाया।
ऊँचा कुल में ऊपजे, सीधी मिलसी माया॥

२. अंग से बालक उपजे, अंग से उपजे जूं।
बालक की रक्षा करें, जूं ने मारे क्यूं?॥

३. जितने जग में जीव हैं, सब ही सुख को चाह।
तूं भी सुख जो चाहतो, कर यतना चित्त लाय॥

४. जर, जोरु और जमीन का, जग में झगड़ा होय।
नाना दोयता लड़ लिया, हार हाथी के तोय॥

५. दिल के अन्दर है खुदा, दिल से खुदा न दूर।
दिल को सताना फिर बता, उस रब को कब मंजूर॥

६. बकरी पाती खात है, ताकि काढ़ी खाल।
जो बकरी को खात है, ताका बुरा हवाल॥

७. सुख दिया सुख होत है, दुःख दिया दुःख होय।
आप हणे नहीं अवर को, तो आपको हणे न कोय॥

८. सब आगमों के मन्थन में, बात मिली है दोय।
दुःख दिया दुःख होत है, सुख दिया सुख होय॥

९. धर्म न वाडी निपजे, धर्म न हाट बिकाय।
धर्म विवेको निपजे, जे करीये तो थाय॥

श्री अखिल भारतीय सुधर्म जैन संस्कृति रक्षक संघ

ब्यावर (राज.)